eISSN:2581-4885
DEV SANSKRITI
VISHWAVIDYALAYA
PUBLICATION

PERSPECTIVE ARTICLE

संस्कृति पुरुष के रूप में पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी के साहित्य एवं जीवन-चरित्र का विश्लेषण

मधु सिंह[1], ईप्सित प्रताप सिंह[2], आशीष कुमार[3]

[1]शोधार्थी, इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखंड, भारत
[2]सहायक प्राध्यापक, इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखंड, भारत
[3]पोस्ट डाक्टरल फेलो, पर्यटन प्रबंधन विभाग, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखंड, भारत

सारांश पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी, एक ऐसे विद्वान और साधुता के परिचायक थे, जिन्होंने अपने सम्पूर्ण जीवन में संस्कृति को पुनर्निर्माण करने के लिए अपनी भूमिका निभाई। आचार्य जी का साहित्य और जीवन चरित्र, दोनों ही एक दूसरे के पूरक है तथा एक अद्वितीय संबंध से जुड़े हुए हैं जो उनकी पहचान संस्कृति पुरुष के रूप में बनाते हैं। इस शोध पत्र के माध्यम से शोधार्थियों ने उनके साहित्य और जीवन चरित्र का विश्लेषण किया है। पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी के साहित्य और जीवन चरित्र का विश्लेषण हमें उनके भारतीय संस्कृति के प्रति योगदान के महत्व को समझने में मदद करता है। उनका साहित्य और जीवन उनकी संस्कृति प्रेम और धर्म समर्पण की अद्वितीयता को प्रकट करते हैं, जिससे समाज को एक नई दिशा मिलती है। इस शोध पत्र के माध्यम से उनकी शिक्षाओं और उनके भारतीय संस्कृति के प्रति समर्पण को नये दृष्टिकोण से उजागर करने का प्रयास किया गया है।

कूटशब्द अध्यात्म, साहित्य, भारतीय संस्कृति, संस्कृति पुरुष

*CORRESPONDENCE
Madhu Singh, Department of History and Indian Culture, Dev Sanskriti Vishwavidyalaya, Haridwar, Uttarakhand, Bharat
Email: madhusingh.dsvv@gmail.com

PUBLISHED BY
Dev Sanskriti Vishwavidyalaya
Gayatrikunj-Shantikunj,
Haridwar, India

OPEN ACCESS
Copyright (c) 2025 सिंह एवं अन्य
Licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License

https://doi.org/10.36018/dsiij.26.382

प्रस्तावना

आचार्य जी ने यज्ञीय विधा और ऋषि परम्परा के माध्यम से संस्कृति को पुनर्निर्माण करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने बताया कि यज्ञ का अर्थ न केवल भौतिक हवन है, बल्कि आत्मा की पूर्णता की दिशा में साधन करना है [1]। इस यज्ञीय विधा के माध्यम से समाज में सामंजस्य और सामृद्धि का साधन होता है। ऋषि परम्परा को जिवंत रखने से उन्होंने संस्कृति को एक अद्वितीय और सतत स्रोत मान्यता प्रदान की। आचार्य जी ने वसुधैव कुटुम्बकम के सिद्धांत का सुरक्षण करने के लिए कई प्रयास किए। उन्होंने बताया कि पूरे विश्व को एक परिवार के रूप में देखना चाहिए और भाईचारा, सामंजस्य, और सहयोग के माध्यम से ही संस्कृति को सुरक्षित रखा जा सकता है [2]। उन्होंने विश्वभर में विभिन्न समुदायों को मिलकर रहने, शेयर करने, और साथ मिलकर उत्थान करने का समर्थन किया। उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने अपने साहित्य, जीवन चरित्र, और दृष्टिकोण के माध्यम से संस्कृति के पुनः निर्माण, विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय, यज्ञीय विधा और ऋषि परम्परा का पुनर्जीवन, और वसुधैव कुटुम्बकम के माध्यम से संस्कृति संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनके विचार और योगदान से हमें सामाजिक एवं धार्मिक समृद्धि की दिशा में मार्गदर्शन मिलता है।

श्रीराम शर्मा आचार्य जी का जीवन परिचय

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी का जीवन एक उदाहरणीय साधुता और विद्वत्ता का संगम है। उनका जन्म, बचपन, विद्या ग्रहण, और संस्कृति में उनके योगदान का विशेष परिचय किया जाएगा। जब-जब संसार में धर्म की हानि होती है तब तब किसी अवतारी सत्ता ने जन्म लिया है, कभी राम ने संस्कृति पुरुष को भूमिका निभाई तो कभी कृष्ण ने और कभी परशुराम ने निभाई। इन सबकी भूमिका का निर्वहन करने के लिए एक अवतारी चेतना ने जन्म लिया जिसमें इन सभी महापुरुषों के गुण विद्यमान थे। वह राम भी थे, कृष्ण भी थे, वह भक्ति के भी शिखर पर पहुंचे थे, संस्कृति के उत्थान करने वाले भी थे इसके अलावा विज्ञान को भी समझने वाले थे। ऐसे महान संस्कृति पुरुष का नाम श्रीराम शर्मा आचार्य जी था।

श्रीराम शर्मा आचार्य जी का जन्म आश्विन कृष्ण त्रयोदशी विक्रमी संवत 1969 (20 सितम्बर, 1911) को उत्तर प्रदेश के आगरा जनपद के आंवलखेड़ा ग्राम में हुआ था [3]। उनका बाल्यकाल व किशोराकाल ग्रामीण परिसर में ही बीता। वे जन्में तो थे एक जमींदार घराने में जहां उनके पिता श्री पं. रूप किशोर जी शर्मा, आस पास के दूर दराज के राजघराने के राजपुरोहित, भागवत कथाकार थे, किंतु उनका अंतःकरण मानव मात्र की पीड़ा से सतत विचलित रहता था। श्रीराम की माता का नाम दान कुंवरी देवी था। महामना मदन मोहन मालवीय ने श्रीराम को काशी मे गायत्री मंत्र की दीक्षा दी थी। संस्कृति पुरुष श्रीराम शर्मा आचार्य ने संस्कृति के पुण्य प्रभाव को नई चेतना दी है। उन्होंने निष्प्राण होती जा रही भारतीय युवा मानसिकता में नवप्राणों का संचार किया है। रूढ़ियों के प्रति विद्रोह की चिंगारी के साथ ही उन्होंने धर्म और संस्कृति के सत्य स्वरूप को जानने की भावभूमि भी दी है। पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने संस्कृति के उत्थान के लिए यज्ञ, सोलह संस्कार, ऋषि परंपरा एवं पर्व-त्योहारों को बढ़ावा दिया है [4]। श्रीराम शर्मा जी के अनुसार-भारतीय संस्कृति के पुनरूत्थान के लिए नैतिक एवं चारित्रिक दृष्टि से युग निर्माण के लिए सामाजिक एवं बौद्धिक क्रांति के लिए आध्यात्मिकता,आस्तिकता एवं धार्मिकता की प्रतिष्ठापना के लिए संगठित प्रयत्न ही सफल हो सकते हैं। आज जब भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य सभ्यता का तेजी से आक्रमण हो रहा है, ऐसी स्थिति में यह अनिवार्य हो जाता है कि हम उसके प्रत्येक पहलू को जो विज्ञान सम्मत है तथा हमारे दैनंदिनी जीवन पर प्रभाव डालने वाला भी हो तो इसे हम जन-जन के समक्ष प्रस्तुत करें ताकि हमारी धरोहर आर्य संस्कृति के आधारभूत तत्व नष्ट न होने पाए [5]।

साहित्य के क्षेत्र में योगदान

आचार्य जी ने अपने शिक्षार्थियों और समाज के लिए अनेक पुस्तकें और ग्रंथ लिखे हैं। उनके लेखन सौम्य, गहरे अध्ययन, और संस्कृति के प्रति उनके अद्वितीय दृष्टिकोण को प्रतिबिम्बित करते हैं। 1935 के बाद उनके जीवन का नया दौर शुरू हुआ, जब गुरु सत्ता की प्रेरणा से वे श्री अरविंद से मिलने पांडिचेरी, गुरुदेव ऋषिवर रविंद्रनाथ टैगोर से मिलने शांति निकेतन तथा बापू से मिलने साबरमती आश्रम अहमदाबाद गए। सांस्कृतिक आध्यात्मिक मोर्चे पर राष्ट्र को कैसे परतंत्रता की बेड़ियों से मुक्त किया जाए, यह निर्देश लेकर अपना अनुष्ठान यथावत चलते हुए उन्होंने पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रवेश किया जब आगरा में 'सैनिक' समाचार पत्र के कार्यवाहक संपादक के रूप में श्री कृष्ण दत्त पालीवाल जी ने उन्हें अपना सहायक बनाया [6]। बाबू गुलाब राय वह पालीवाल जी से सीख लेते हुए सतत स्वाध्यायरत रह कर उन्होंने अखंड ज्योति नामक पत्रिका का पहला अंक 1938 की वसंत पंचमी पर प्रकाशित किया। पुनः सारी तैयारी के साथ विधिवत 1940 जनवरी से उन्होंने परिजनों के नाम पाती के साथ अपने हाथ से बने कागज पर पैर से चलने वाली मशीन से छापकर 'अखंड ज्योति 'पत्रिका का शुभारंभ किया जो पहले तो 250 पत्रिका के रूप में निकली किंतु क्रमशः उनके परिश्रम द्वारा घर-घर पंहुचाने,मित्रों तक पहुंचाने वाले उनके हृदय स्पर्शी पत्रों द्वारा बढ़ती बढ़ती नवयुग के मत्स्य अवतार की तरह आज 10 लाख से भी अधिक संख्या में विभिन्न भाषाओं में छपती व एक करोड़ से अधिक व्यक्तियों द्वारा पढ़ी जाती हैं। पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने तप साधना युक्त व्यक्तित्व से लेखनी की जड़ता को भेदकर साहित्य का सृजन किया है लगभग सभी आर्ष ग्रंथो का संस्कृत से हिंदी अनुवाद उन्होंने किया है चार वेद, 108 उपनिषद, छः दर्शन, आदि सभी ग्रंथो का अध्ययन व अनुवाद करने और उन्हें सर्वसाधारण तक पहुंचने में अथक एवं सफल परिश्रम किया गया है [7]। 3000 से अधिक पुस्तकों में जहां व्यवहारिक जीवन में आध्यात्मिक सिद्धांतों का समावेश कर सरल व भाव भरा मार्गदर्शन है वहीं 'गायत्री महाविज्ञान' जैसे गूढ़तम साधनात्मक रहस्यों के विधान वाला ग्रंथ भी है।

आचार्य श्री की भाषा शैली इतनी सरल स्पष्ट एवम स्तरीय है कि विद्वान से लेकर साधारण व्यक्ति भी उससे लाभान्वित हो सकता है। अनगिनत पत्र पत्रिकाओं के बाढ़ और अधिकांश में फैले विचार प्रदूषण के बीच अखंड ज्योति पत्रिका अरुण नेम सूर्योदय की भारतीय प्रकाश को प्राण देने वाली संजीवनी है [8]। आचार्य श्री का साहित्य मात्र शब्द नहीं है वरन उनकी तप साधना से उद्भूत ऊर्जा से ओतप्रोत अनुभूतियां हैं, यह साहित्य चिंतन कल्पना शक्ति, भाव संपदा,तर्क संबंधी के साथ मान व उत्कर्ष सूत्रों को समग्र रूप में समाहित करता है उनकी रचनाएँ सारे संसार के लिए उपयोगी आवश्यक और समसामयिक होने के साथ ही साहित्य की दृष्टि से भी रुचिकर तथा संवेदना के समुद्र अनुभूति के साथ प्रखरता उत्साह तेजस्विता व जीवंतता तथा विश्व समाहित है [9]।

आचार्य श्री के साहित्य को योग साहित्य नाम दिया गया है क्योंकि युग की समस्याओं पर ऐसी सटीक टिप्पणी और ऐसे अचूक समाधान देने का कार्य उनकी ही लेखनी ने किया [10]। प्रस्तुत विशाल सत्साहित्य का सृजन इसलिए आवश्यक है ताकि इक्कीसवीं सदी उज्जवल भविष्य के अभिनव प्रसंग, पृष्ठभूमि और रूपरेखा के संबंध में जिन

बातों के अनुपात रूप तात्कालिक आवश्यकता है उन्हें सत्साहित्य के रूप में प्रस्तुत किया जा सके।

संस्कृति और धर्म के प्रति उनका समर्पण

आचार्य जी ने भारतीय संस्कृति और धर्म के प्रति अपने अद्वितीय समर्पण के माध्यम से एक सांस्कृतिक नेता की भूमिका निभाई है। उनकी रचनाएँ और उनके धार्मिक दृष्टिकोण के प्रति विशेष ध्यान दिया जाएगा। भारतीय संस्कृति के मूल में सामाजिक समरसता व वैचारिक साम्य को स्थापित करने का भाव रहा है। समस्त परंपराएं भी इसी संतुलन को प्राप्त करने की ओर इशारा करती रही हैं। नीति की स्थापना एवं अनीति का उन्मूलन ही भारतीय चिंतन की समृद्धता का प्रतीक है। जप-पूजा कर्मकांड करना, परंतु दुष्टता को पनपने देना सदाचार की परिभाषा नहीं हो सकती है। अध्यात्म कभी भी एकांगी चिंतन का पर्याय नहीं हो सकता [11]। यह सत्य है कि किसी से बैर न करना, किसी से ना लड़ना, दूसरों को क्षमा करना, दया करुणा,अहिंसा, मानवता के मूलभूत सिद्धांत है, परंतु इनके साथ ही धर्म की रक्षा करने के लिए अपने प्रतिबद्धता घोषित करना भी अध्यात्म का ही मूल मंत्र है [12]।

जब कोई एक समाज कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी अपने व्यक्तिगत मान अपमानों की परवाह किए बिना अपने राष्ट्र, अपनी मातृभूमि के अस्तित्व पर आए संकट या संघर्ष में अपने प्राणों की बाजी लगता है या फिर बलिदान हो जाता है तो वह व्यक्तिगत रूप से उस राष्ट्र और समाज की संस्कृति एवं धर्म की रक्षा करता है और बलिदान होना ही उस बलिदानी वीर पुरुष की संस्कृति है [13]।

कहते हैं कि किसी भी राष्ट्र और उसके नागरिकों के अस्तित्व के लिए संस्कृति उतनी ही महत्वपूर्ण है, जितना कि उनके लिए भोजन, हवा और पानी। जिस प्रकार भोजन हवा और पानी के बिना कोई राष्ट्र और उसके नागरिक जीवित नहीं रह सकते इस प्रकार बिना संस्कृति के राष्ट्र और नागरिकों का कोई अस्तित्व नहीं रह सकता है । संस्कृति के पुण्य प्रवाह के परिशोधन का संकल्प लेकर नई सूर्योदय का संदेश लेकर एक स्वर मुखरित हुआ हिमालय की गहनताओ में तप साधना की प्रभा फिर से फेली वेदों की सार-साधना शक्ति के रूप में गायत्री का फिर से अवतरण हुआ [14]। परम पूज्य गुरुदेव पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी के रूप में संस्कृति के पुण्य प्रवाह में फिर से पावनता आई उसमें आया ठहराव फिर से तीव्रगामी हुआ सच ही है कि ऋषियों की वाणी को कोई ऋषि ही उद्भासित कर सकता है। संस्कृति पुरुष परम पूज्य गुरुदेव ने संस्कृति के पुण्य प्रवाह को नई चेतना दी। उन्होंने निष्प्राण होती जा रही भारतीय युवा की मानसिकता में नव प्राणों का संचार किया। रूढ़ियों के प्रति विद्रोह की चिंगारी के साथ ही उन्होंने धर्म एवं संस्कृति के सत्य स्वरूप को जानने की भाव भूमि भी दी है [15]।

परम पूज्य गुरुदेव कहते थे कि आने वाले युग का संविधान भारतीय संस्कृति के मूल्य पर ही आधारित होगा और इनको ध्यान में रखते हुए लिखा जाएगा। पूज्य गुरुदेव ने भारतीय संस्कृति के चार मूल आधार घोषित किये और यह कहा कि आने वाले समय में यही विश्व में एक राष्ट्र और एक संस्कृति का आधार बनेंगे हमारी संस्कृति की यह चार आधार एकता, समता, सुचिता एवं ममता है [16]। आज जब संपूर्ण विश्व भारत की ओर एक आशा भरी निगाहों से देखता है और यह कल्पना सनजोता है कि इस भूमि से निकलने वाली विचारधारा आने वाले विश्व को एक नई दिशा दे पाने में सक्षम हो सकेगी तब भारतीय संस्कृति के मूल आधार ही नवयुग का संविधान बनेंगे [17]। आज जब वर्तमान पीढ़ी आंख मूंदकर विदेशी सभ्यता को अपनाने के लिए आतुर नजर आती है, ऐसे में समाज के जिम्मेदार नागरिकों का यह कर्तव्य बन जाता है कि वह भारतीय संस्कृति को अक्षुण रखें। ऐसा कर पाना तभी संभव है, जब हम वैदिक संस्कृति के इन महान गुणों को अपने जीवन में धारण करें और स्वयं इस संस्कृति के वाहक एवं अग्रदूत बनें।भारतीय संस्कृति के मूलमंत्रो में इसकी आध्यात्मिक मूल्यों के प्रति निष्ठा, इसकी मानवीय गुणों में अभिवृद्धि की आकांक्षा, इसकी भौगोलिक एवं सांस्कृतिक एकता के प्रति कटिबद्धता एवं इसके द्वारा प्रतिपादित- प्रचारित- प्रसारित मूल्यों का सार्वभौम होना है।यह ध्यान में रखते हुए कि हमारी संस्कृति विश्व के प्रत्येक व्यक्ति के लिए समान रूप से प्रभावी है, युग निर्माण आंदोलन के प्रवर्तक एवं 21वीं सदी को मानव जाति का उज्जवल भविष्य घोषित करने वाले परम पूज्य गुरुदेव पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने भारतीय संस्कृति को ही वैश्विक संस्कृति का आधार माना है [18]।

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा संस्कृति का पुनः निर्माण

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने अपने जीवन के दौरान भारतीय संस्कृति के पुनर्निर्माण के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनका दृष्टिकोण और समर्पण संस्कृति के प्रति अत्यंत समर्पित था, जिससे उन्होंने समाज को समृद्धि, नैतिकता, और धार्मिकता की दिशा में मार्गदर्शन किया। यहां कुछ क्षेत्रों में उनके संस्कृति के पुनः निर्माण के योगदान की विशेषताएँ हैं -

शिक्षा क्षेत्र में योगदान

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने शिक्षा को एक महत्वपूर्ण साधन माना और अपने शिक्षार्थियों को संस्कृति, नैतिकता, और धर्म के मूल्यों के साथ प्रेरित किया। उन्होंने शिक्षा के माध्यम से समाज में संस्कृति को प्रसारित करने का उद्देश्य रखा और युवा पीढ़ी को धरोहर के मूल्यों के प्रति संवेदनशील बनाने का कार्य किया। इन दिनों हमारी शिक्षा प्रणाली कई कमियों के दौर से गुजर रही है, यही कारण है कि हमारे देश के युवा हमारे अपनी भारतीय संस्कृति को एवं उसकी सभ्यता को भूलते जा रहे हैं। हमारी माध्यमिक और उच्च शिक्षा प्रणाली को कुछ ऐसी गलत दिशा दे दी गई है कि इसमें शिल्प की महत्ता खो गई है और रटने के महत्व को बढ़ा दिया गया है। यहां तक की विश्वविद्यालय शिक्षा को भी समाज की जरूरत से नहीं जोड़ा गया है इसलिए इस शिक्षा प्रणाली का भी पराभाव हुआ है। वर्तमान में युग तीर्थ शांतिकुंज में भी युग शिल्पी सत्र के माध्यम से हस्तशिल्प प्रशिक्षण को बढ़ावा दिया जा रहा है और देव संस्कृति विश्वविद्यालय में ग्राम प्रबंधन, समग्र स्वास्थ्य प्रबंधन, हथकरघा उद्योग, कागज उद्योग आदि के माध्यम से श्रम व शिल्प को महत्व दिया जा रहा है। इसी परंपरा को भारत के कोने-कोने में स्थापित करने की जरूरत है। यह परंपराएं कहीं ना कहीं हमारे भारतीय संस्कृति के पुन: निर्माण में अपना योगदान प्रदान कर रही हैं [19]।

धर्म और संस्कृति का प्रचार-प्रसार

आचार्य जी ने धर्म और संस्कृति को समाज में प्रसारित करने के लिए अपने जीवन को समर्पित किया। उनके व्याख्यान, पुस्तकें, और लेखन में संस्कृति के महत्व को बढ़ावा दिया और लोगों को उसके मूल्यों को समझने और अपनाने के लिए प्रेरित किया। पूज्य गुरुदेव के अनुसार 'धर्म' शब्द को मोटे अर्थों में सांप्रदायिक मान्यताओं और पूजा-परक कर्मकांडों के साथ जुड़ा माना जाता है। धार्मिक परंपराओं के निर्वाह में भी इसका बोध होता है। वैसे तो धर्म का वास्तविक अर्थ कर्तव्य पालन है। पर इन दोनों सर्वसाधारण के मस्तिष्क में संप्रदाय विशेष

बनकर रह गया है। इसी कारण एक विश्व धर्म या मानव धर्म के रूप में उसे तत्वज्ञानी समझते हैं। तथाकथित धार्मिक लोग उसे अपने कर्म में प्रचलित परंपराओं के साथ ही जोड़ते हैं और निर्धारित क्रिया कृत्य कर लेने पर अपने को सच्चा धार्मिक समझने लगते हैं [20]। किसी धर्म के जीवित या निर्जीव होने का किसी धर्म के गुरुता और लघुता का पता उस धर्म पर चलने वालों के जीवन से चलता है। अगर इस कसौटी पर आज हिंदू धर्म को कसा जाए तो स्पष्ट रूप से जान पड़ेगा कि आज हमारे धर्म का कैसा घोर पतन हुआ है। एक समय था जब हमारे यहां धर्म का सच्चा प्रचार था जब धर्म ही जीवन था पर अभी कुछ ही वर्षों पहले ऐसा भी समय आ गया जब पढ़े-लिखो विद्वान हिंदू अपने को हिंदू कहने में शर्माते थे। परंतु अब वह समय बदल गया।आज सारे संसार में हमारे धर्म की महत्ता, गंभीरता और सत्यत्ता है [21]। पूज्य गुरुदेव द्वारा बताए गए श्लोक "सा प्रथमा संस्कृति: विश्ववारा" अर्थात हमारे भारतीय संस्कृति समस्त विश्व में कभी सव्याप्त थी। आगे भी होने जा रही है यह वेद की घोषणा है भारतीय संस्कृति देव संस्कृति है। वह कृति-कार्यपद्धति, जो संस्कार देती हो,संस्कृति कहलाती है। परम पूज्य गुरुदेव ने 34वें वांग्मय में खंड-भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्व में सांस्कृतिक मान्यताओं की वैज्ञानिक पृष्ठभूमि पर विस्तार से प्रकाश डाला है। प्रतीक पूजा से लेकर पुनर्जन्म की मान्यता,आस्तिकता के तत्व दर्शन से लेकर स्वर्ग-नरक की मान्यता, ब्रह्म तत्व की सही परिभाषा से लेकर कर्मफल के सत्य एवं जीवन के चरम लक्ष्य तक ले जाने वाले चार पुरुषार्थों का इसमें विस्तार से वर्णन है[21]। 35वें खण्ड -समस्त विश्व को भारत के अजस्र अनुदान एक प्रकार से शोध ग्रंथ है, जिसे एक प्रवाह में गुरु सत्ता द्वारा अपनी विदेश यात्रा के दौरान जहाज की लंबी 40 दिन की यात्रा में 1972 से 73 में लिखा गया है। इस विराट ग्रंथ में पूज्यवर ने लिखा है कि देव संस्कृति की विशेषता-विविधता क्या थी? भारत विश्व का जगतगुरु था, है एवं फिर बनेगा यह स्पष्ट घोषणा है युग ऋषि परम पूज्य गुरुदेव की [22]। 36 वा खंड है-धर्मचक्र-प्रवर्तन एवं लोक मानस का शिक्षण। पूज्यवर की संस्कृति को अमूल्य धरोहर है- धर्म तंत्र से लोक-शिक्षण। धर्म तंत्र में अपरिमेय शक्ति-सामर्थ्य है। जरूरत है उसे पर्व- त्योहारों-ग्रंथों द्वारा जन-जन तक शिक्षण हेतु पहुंचने की [23]। प्रवासी भारतीयों की वर्तमान स्थिति और उनके द्वारा निभाए जाने वाले संस्कृति दूतों के दायित्व पर भी पूज्यवर ने दृष्टि डाली है और लिखा है कि यह भवितव्यता है कि भारत का सांस्कृतिक गौरव पुनः लौटेगा और भारतीय तत्वज्ञान विश्व व्यापी होगा योग और आयुर्वेद, अध्यात्म विश्व के कोने-कोने में पहुंचेंगे [24]।

क्र.	क्षेत्र	योगदान / विश्लेषणात्मक बिंदु
1	जीवन चरित्र	त्याग, सेवा, ऋषि परंपरा का पालन, अध्यात्म और राष्ट्र सेवा का अद्वितीय समन्वय
2	साहित्य	3000+ पुस्तकें, वेदों व उपनिषदों का सरल हिंदी अनुवाद, 'अखण्ड ज्योति' का प्रकाशन
3	संस्कृति संरक्षण	यज्ञीय विधा, ऋषि परंपरा, पर्व-त्योहारों का पुनर्जीवन
4	धर्म दृष्टिकोण	अध्यात्म और नैतिक जीवन, धर्म का व्यावहारिक रूप, सामाजिक सुधार में भागीदारी
5	शिक्षा क्षेत्र	चरित्र निर्माण आधारित शिक्षा, श्रम-शिल्प शिक्षा, युवा सशक्तिकरण
6	वैज्ञानिक अध्यात्म	विज्ञान और अध्यात्म का समन्वय, वैज्ञानिक दृष्टिकोण को आम जन से जोड़ना
7	वैश्विक चिंतन	वसुधैव कुटुम्बकम की भावना, वैश्विक संस्कृति का संवाहक
8	यज्ञ विज्ञान	यज्ञ को जीवन शैली और वैज्ञानिक उपचार प्रक्रिया के रूप में स्थापित करना

तालिका 1: पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी के योगदान का सारांशात्मक विश्लेषण

साहित्य के माध्यम से संस्कृति को प्रोत्साहन

आचार्य जी के साहित्य में संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को समर्थन और प्रोत्साहन मिलता है। उनकी रचनाएँ धार्मिक और सांस्कृतिक सिद्धांतों को बढ़ावा देती हैं और लोगों को उसे समझने के लिए प्रेरित करती हैं। पूज्य गुरुदेव ने जीवन भर जनकल्याण हेतु साहित्य सृजन किया,उनके तप एवं ज्ञान का निचोड़ उनके साहित्य में है सभी लोगों तक यह ज्ञान गंगा पहुंचे,इसलिए 'पंडित श्रीराम आचार्य वांग्मय का प्रकाशन किया गया। लाखों लोगों ने इसे पढ़कर जीवन धन्य बनाया। हर घर में वांग्मय की स्थापना होनी चाहिए परिवार के लिए यह अमूल्य धरोहर एवं विरासत है [25]। पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने अपने द्वारा लिखे गए साहित्य के माध्यम से हमारी भारतीय संस्कृति को पुनर्जीवित किया।

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा विज्ञान एवं अध्यात्म का समन्वय

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने अपने जीवन के दौरान विज्ञान और अध्यात्म के बीच समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया। उनका दृष्टिकोण विज्ञान और अध्यात्म के बीच संतुलन बनाए रखने की दिशा में अत्यंत महत्वपूर्ण था, जिससे उन्होंने सामाजिक और मानवीय उत्थान के लिए एक समृद्धि साधने का प्रयास किया। यहां कुछ क्षेत्रों में उनके विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय के प्रयासों की विशेषताएँ है।

अध्यात्म और वैज्ञानिक दृष्टिकोण

आचार्य जी ने अध्यात्म और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को मिलाकर एक समर्थ साधन बनाया। उन्होंने बताया कि अध्यात्म और विज्ञान दोनों ही जीवन के अद्वितीय पहलुओं को समझने में सहायक हो सकते हैं और एक दूसरे को पूर्ण कर सकते हैं। वैज्ञानिक अध्यात्म में वैज्ञानिक जीवन दृष्टि एवं आध्यात्मिक जीवनमूल्यों का सुखद समन्वय है। सूत्र वाक्य में कहें तो वैज्ञानिक जीवन दृष्टि में परंपराओं की तुलना में विवेक को महत्व मिलता है। वेदों के ऋषिगण इसी का 'सत्यमेव जयते' के रूप में उद्घोष करते हैं।वैज्ञानिक जीवन दृष्टि का यह सत्य आध्यात्मिक जीवन मूल्यों की परिष्कृत संवेदना से मिलकर पूर्ण होता है। वैज्ञानिक अध्यात्म के प्रयोग की निरंतरता जीवन को स्त्यानवेशी से किंतु संवेदनशील बनाए रखती है। इसके द्वारा मनुष्य में वैज्ञानिक प्रतिभा एवं संत के संवेदना का कुशल समायोजन व संतुलन बन पड़ता है इसका विस्तार यदि समाज व्यापी होगा तो समाज धर्म विशेष मत विशेष, मतविशेष

व पंथ विषेश के प्रति हठी एवं आग्रही नहीं होगा।यहां संपूर्ण विश्व के सभी मत एवं सभी पंथों की समस्त श्रेष्ठाएं सहज ही सम्मानित होंगी। वैज्ञानिक अध्यात्म के प्रयोग के सभी परिणाम समाज में आध्यात्मिक मानवतावाद की प्रतिष्ठा करेंगे। इसी सत्य का साक्षात्कार युग ऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य ने युग क्रांति करने वाले प्रकाशदीप के रूप में अपने चेतना के समाधि शिखरो पर आसीन होकर किया था। इससे ही प्रज्वलित अनगिनत क्रांति दीप युग की भावितव्यता को उज्जवल स्वरूप देने का कार्य कर रहे हैं [26]। परम पूज्य गुरुदेव पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी का मार्ग दर्शक सत्ता के प्रथम मिलन वाले ब्रह्म मुहूर्त बसंत पर्व सन 1926 से प्रत्येक दिन का ब्रह्म मुहूर्त उनके लिए विशिष्ट होता आया था,पर इस दिन इसकी विशिष्टता कुछ खास विशेष थी हिमालय की ऋषिसत्ताओं एवं सदगुरुदेव स्वामी सर्वेश्वरानंद की सूक्ष्म अनुभूतियों की श्रृंखला के साथ उनके चिदाकाश में "वैज्ञानिक आध्यात्मिक" के दो शब्द महामंत्र की तरह प्रकाशित और ध्वनित हुए थे यह वैज्ञानिक अध्यात्म के महामंत्र का प्रथम साक्षात्कार था ऐसा साक्षात्कार करने वाले दिव्य अनुभूतियों के बाद हमेशा ही उनके अंतर जगत एवं बाह्य जगत में घटनाक्रमों का क्रम चल पड़ा था। वैज्ञानिक अध्यात्म का मूल मंत्र गायत्री महामंत्र है इसमें वैज्ञानिक आध्यात्मिक के सिद्धांत संरचना एवं इसके प्रयोग विधि दोनों का समावेश है। वैज्ञानिक अध्यात्म 21वीं साड़ी के अगले कुछ वर्षों में घटित होने जा रही वैचारिक क्रांति की प्रकाश पूर्ण पक्ष ध्वनि है। विज्ञान की उपलब्धियों का लाभ उपभोग के साधनों के रूप मे मिलता है, जिसके लिए मनुष्य को विविध रूपों में मूल्य चुकाना पड़ता है पर उपभोग मे सदुपयोग की दूरदर्शी दृष्टि का विकास अध्यात्म ज्ञान के बिना संभव नहीं है।

संस्कृति के उत्थान के लिए यज्ञीय विधा व ऋषि परम्परा का पुनर्जीवन

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने संस्कृति के उत्थान के लिए यज्ञीय विधा और ऋषि परम्परा को पुनर्जीवन देने में महत्वपूर्ण योगदान किया है। उनका दृष्टिकोण यह था कि ये पारंपरिक तत्व समृद्धि, नैतिकता, और मानवीय मूल्यों को बढ़ावा देते हैं। गायत्री और यज्ञ का युग में है एक को भारतीय संस्कृति की जननी और दूसरे को भारतीय धर्म का पिता कहा गया है दोनों अन्योन्याश्रीत माने गए हैं। गायत्री जब का अनुष्ठान यज्ञ का समन्वय हुए बिना पूरा नहीं हो सकता जब का एक अंश हवन भी करना होता है।

आचार्य जी ने संस्कृति को आध्यात्मिक और उन्होंने बताया कि यज्ञ का अर्थ न केवल भौतिक हवन है, बल्कि आत्मा की पूर्णता की दिशा में साधन करना है। मोटे रूप में यज्ञ की समझ अग्नि कुंड में मंत्र उच्चारण के साथ हवन सामग्री की आहुति से जुड़ी है। यह तो यज्ञ का कर्मकांडीय और भौतिक पक्ष है।इसे समान रूप से हवन के नाम से भी जाना जाता है।इसी का दूसरा नाम अग्निहोत्र है किंतु यज्ञ स्वयं में बहुत गहरा और व्यापक अर्थ लिए हुए हैं यह संस्कृत की 'यज' धातु से बना हुआ है, जिसका अर्थ है- देव पूजन, संगति करण और दान। यह यज्ञीय विधा न केवल भगवान की पूजा का एक रूप है, बल्कि समाज में सामंजस्य और समृद्धि का साधन भी है। यज्ञ भारतीय संस्कृति का पिता है यह इसका आदि प्रतीक है हमारी संस्कृति में वेदों में यज्ञ का जितना जिक्र किया गया है उतना अन्य किसी विषय का नहीं वास्तव में वैदिक धर्म यज्ञ प्रधान रहा है यज्ञ को इसका प्राण कहे तो गलत नहीं होगा प्राचीन भारत की कल्पना करते ही मित्रों के उच्चारण के साथ यज्ञ करते हुए ऋषि मुनियों के चित्र बर्बशी आंखों के सामने आ जाते हैं। यज्ञ विज्ञान की प्रमाणिकता को सिद्ध करने के लिए यह आवश्यक है कि हवन कुंड से उठने वाली यज्ञ शाखा का विस्तृत भौतिक विश्लेषण किया जाए। इससे स्पष्ट हो जाएगा कि यज्ञ कुंड से काफी मात्रा में विद्युत चुंबकीय तरंगे होती हैं और यह माइक्रोवेव या अल्ट्राशॉर्टवेव स्तर की होती हैं।इन तरंगों की प्रगाढ़ता यज्ञ कुंड के आस पास के वातावरण को ठंढा करने से बढ़ जाती है [27]। पूज्य गुरुदेव कहते हैं कि यज्ञ के पीछे का मूल दर्शन यज्ञ जीवन में समाहित है इसका अर्थ है समाज से लेना काम और उसको देना ज्यादा।जो निस्वार्थ भाव से अपने समय साधन सुविधाओं का सदुपयोग सामाजिक उत्थान के लिए करना सीख जाते हैं वे यज्ञ जीवन का प्रतीक बन जाते हैं। यज्ञ के पीछे निहित इस ज्ञान के अतिरिक्त यज्ञ का एक विज्ञान भी है जिसके माध्यम से यज्ञ से निकला औषधियों का धूम्र व्यापक स्तर पर चिकित्सकीय प्रभाव डालने में सक्षम होता है [27]। पूज्य गुरुदेव के अनुसार सृष्टि चक्र का मूल सिद्धांत है यज्ञ-यह सृष्टि केवल एक ही सिद्धांत पर टिकी हुई पड़ी है जिसका नाम यज्ञ है। यज्ञ की अग्नि हमें हमेशा ऊपर की ओर उठाना सिखाती है, अग्नि के जैसे मजबूत बनना चाहिए। परम पूज्य गुरुदेव कहते हैं कि यज्ञ आदर्श हमारे अंदर जिंदा रहे तो हम अग्नि के सामान जैसे श्रेष्ठ आर्य उच्च कोटि के हिंदू हैं हम जहां कहीं भी रहेंगे सबको अपने सामान बनाकर के रहेंगे चाहे कोई भी क्यों ना हो यह शिक्षा यज्ञ से ही मिलती है। हमारा यह यह बताता है कि जो भी आपके पास है उसको बांट दे दीजिए और समाज में वितरण कर दीजिए।यह समाज व्यवस्थाएं हैं। या मानवीय नीति के सिद्धांत हैं। दुनिया में शांति लाने के लिए यह सिद्धांत है। विश्व शांति की यह सिद्धांत है।इस फिलॉसफी के लिए हमारे यज्ञ हो रहे हैं। यह शांति के लिए यज्ञ होगा। भगवान आएंगे देवता आएंगे देवता प्रसन्न होंगे, देवता किस मायने में आएंगे? श्रेष्ठ विचारों के रूप में, ऊंचे ख्यालों के रूप में आएंगे। आचार्य श्री कहते है कि यह पूर्ण रूप से सिद्ध हो चुका है कि प्राचीन भारतीय सभ्यता में यज्ञ का महत्व सर्वोपरि था और यहां संसार भर में उनका प्रचार हुआ था। यह तो स्पष्ट ही है कि देश और समाज भेद से यज्ञ की विधि या क्रियाएं सामग्री आदि सर्वत्र एक सी नहीं रह सकती पर मूल रूप से यज्ञ की भावना सब देशों और जातियों में पाई जाती थी [28]।

ऋषि परम्परा का महत्व

आचार्य जी ने ऋषि परम्परा को बचपन से ही सीखने और उसे अपनाने की महत्वपूर्णता को बताया। उन्होंने ऋषियों को ज्ञान के स्रोत के रूप में पूजा और उनके शिष्यों को साधना के लिए प्रेरित किया। ऋषि परम्परा को बनाए रखने से उन्होंने संस्कृति को एक अद्वितीय और सतत स्रोत मान्यता प्रदान की। आचार्य जी ने संस्कृति के मूल्यों को पुनर्निर्माण करने के लिए उत्साहित किया। उन्होंने संस्कृति को एक जीवंत और समृद्धि शील सांस्कृतिक विरासत के रूप में स्थापित करने के लिए उपायों का सुझाव दिया और लोगों को उसे महत्वपूर्णता देने के लिए प्रेरित किया।

आचार्य जी ने अपने सामाजिक योगदान के माध्यम से संस्कृति के उत्थान के लिए समर्थन दिया। उन्होंने समाज के विभिन्न वर्गों को संस्कृति के साथ जोड़ने का प्रयास किया और एक सामृद्धिक और एकजुट समाज का समर्थन किया। पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने अपने योगदान के माध्यम से संस्कृति के उत्थान में यज्ञीय विधा और ऋषि परम्परा को महत्वपूर्ण साधनों के रूप में प्रस्तुत किया और समृद्धि, नैतिकता, और मानवीय मूल्यों के साथ एक समृद्ध समाज की दिशा में मार्गदर्शन किया। ऋषि परंपरा में प्राचीन काल में विचारवानों का एक वर्ग जो विशेष बना हुआ था। जिसे समाज में सर्वोपरि स्थान मिला हुआ था। यह वर्ग ऋषि मनीषीयो का था। जिन्हें समाज रूपी शरीर के नियंत्रक नियामक होने का गौरव प्राप्त था ।ऋषि का तात्पर्य दाढ़ी जटा वाले कतिपय पर लोगों से नहीं, अपितु उन विचारशीलों

से था, जिनकी दृष्टि मानवी अंतराल तथा उसके वैयक्तिक एवं सामाजिक स्वरूप को स्पष्ट जानने समझने सुधारने में सक्षम होती था। समाज का वैचारिक दिशा-निर्देश करने वाले व्यक्ति को चाहे ऋषि कहें अथवा विचारक। चाहे मनीषी कह लें अथवा प्रबुद्ध व्यक्ति,समाज को ऊंचा उठाने का श्रेय इन्हीं को रहता था।संसार में व्याप्त जितने भी उन्नत और विचारशील देश हैं, वे सब एकाएक ही उन्नत या समृद्ध नहीं होंगे वरन उन्हें ऊंचा उठाने के लिए कितने ही प्रबुद्ध व्यक्तियों ने अपना असाधारण योगदान दिया है [29]। जो ऋषि परंपरा में आते हैं। समाज में इस ऋषि परंपरा को परम पूज्य गुरुदेव ने जागृत कर एक नई क्रांति खड़ी की जिसके माध्यम से समाज सुधार कर विकसित और सांस्कृतिक मूल्यों के आधार पर सभ्य संकृति विकसित की।उसी को लेकर परम पूज्य गुरुदेव ने विशेष अभियान और विशेष क्रांति खड़ी की जिसे हम विचार क्रांति के नाम से जानते हैं।

वसुधैव कुटुम्बकम द्वारा संस्कृति संरक्षण

वसुधैव कुटुंबकम (वसुधैव कुटुम्बकम) का अर्थ है "वसुधा (पृथ्वी) एक परिवार है" और यह महा उपनिषदों में से एक मुहूर्त पञ्चिका (Maha Upanishad) में पाया जाता है। इस अद्भुत वाक्य ने समाज में एकता, भाईचारा, और सर्वभूतहित की भावना को सुरक्षित करने का संदेश दिया है। पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने इस सिद्धांत को संस्कृति संरक्षण के क्षेत्र में अपनाया है। आचार्य जी ने वसुधैव कुटुम्बकम के सिद्धांत को लोगों के बीच सामंजस्य, एकता, और सर्वभूतहित के लिए प्रेरित करने में महत्वपूर्ण योगदान किया। उन्होंने सार्वभौमिक भावना को समझाया और उसे संस्कृति संरक्षण के लिए एक महत्वपूर्ण उपाय के रूप में देखा। आचार्य जी ने वसुधैव कुटुम्बकम के सिद्धांत को धार्मिकता और सांस्कृतिक समर्थन के लिए प्रेरित करने में बड़ा योगदान दिया। उन्होंने बताया कि सांस्कृतिक समृद्धि के लिए हमें सभी मानवों को एक परिवार के रूप में देखना चाहिए और सभी को एक समान भाव से आदर्श जीवन जीने का अधिकार है। आचार्य जी ने विभिन्न सम्प्रदायों और संस्कृतियों के बीच समरसता और सहयोग को बढ़ावा देने का प्रयास किया। उन्होंने सामाजिक एकता के माध्यम से संस्कृति को समृद्धि की दिशा में बढ़ावा देने के लिए विभिन्न समुदायों के साथ मिलकर काम किया।

आचार्य जी ने भारतीय संस्कृति को विदेशी संप्रदायों के साथ बृहद संबंध स्थापित करने के लिए यात्रा की और विभिन्न भूमिकाओं में बृहद संबंध बनाए रखने का समर्थन किया। इससे संस्कृति का आदान-प्रदान विश्व में बढ़ा और भारतीय संस्कृति को ग्लोबल मानकों के साथ मेल-जोल करने का अवसर मिला। परम पूज्य गुरुदेव संस्कृति पुरुष युग दृष्टा उस महामानव के जीवन क्रम को हम "वसुधैव कुटुंबकम"के भाव से सतत अनुप्राणित पाते हैं। वे अपनी अंदर की बात अपनों के समक्ष लिखते हुए कहते हैं," सुना है आत्मज्ञानी सुखी रहते हैं और चैन की नींद सोते हैं। अपने लिए ऐसा आत्मज्ञान अभी दुर्लभ है। ऐसा ज्ञान मिल भी सकेगा या नहीं, इसमें पूरा संदेह है जब तक व्यथा-वेदना का अस्तित्व इस जगती पर है, जब तक प्राणियों को क्लेश और कष्ट की आग में जलना पड़े, तब तक हम हमें भी चैन से बैठने की इच्छा ना हो। जब भी प्रार्थना का समय आया भगवान से यही निवेदन किया,हमें चैन नहीं वह करुणा चाहिए जो पीड़ितों की व्यथा को अपनी व्यथा समझने की अनुभूति करा सके, हमें समृद्धि नहीं, वह शक्ति चाहिए जो आंखों के आंसू पोंछ सकने की अपनी सार्थकता सिद्ध कर सके। "अखण्ड ज्योति की पंक्तियां समष्टि के साधक, सारी वसुधा को अपना परिवार मानने वाले एवं समाज देवता के आराधक के अंतस की अभिव्यक्ति है [30]। पूज्य गुरुवर ने लिखा है कि विश्व मानव की तड़पन जब अपनी तड़पन बन जाए जब जन-जन की व्यथा-वेदना को सामने खड़ा देख अपनी निज की पीड़ा से अधिक कष्ट अनुभव होने लगे, तो यही अभिव्यक्ति होती है, "दर्द और जलन ने हमें क्षण भर चैन से न बैठने दिया तो हम करते भी क्या जो दर्द से एटा जा रहा हो वहां पर ना पके तो क्या करें?" एक एक वाक्य लगता है कि समस्त वसुधा को अपना कुटुंब मानने वाले विश्व मानव की अपनी अंतः व्यथा का परिचायक है। आध्यात्मिक आदर्शों को व्यवहारिक जीवन में तालमेल बिठाते हुए, विश्वात्मा की सेवा करते हुए आंतरिक प्रगति के पथ पर कैसे चला जा सकता है, संस्कृति पुरूष का जीवन उसका प्रत्यक्ष प्रमाण है [30]। परम पूज्य गुरुदेव ने लिखा है कि "नए विश्व का निर्माण एकता, समता , शुचिता की चार आधारशिलाओं पर निर्भर है इन चारों को संसार की कोने-कोने में विभिन्न देशों और विचारों के व्यक्तियों में अलग-अलग ढंग से प्रतिस्थापित परिपुष्ट एवं फलित किया जा रहा है भारत में शत-सूत्री युग निर्माण योजना इसी आधार पर यहां की परिस्थितियों के अनुरूप गतिशील की गई हैं। पूज्य गुरुदेव लिखते हैं, " अपनों से अपनी बात"में कहते हुए हमें इन पंक्तियों द्वारा यह स्पष्ट कर देना है कि नया युग तेजी से बढ़ता चला आ रहा है।उसे कोई रोक न सकेगा। प्राचीन काल के महान परंपराओं की पुनः प्रतिष्ठा होनी है। महाकाल उसके लिए आवश्यक व्यवस्था बना रहे हैं और तदनुकूल आधार उत्पन्न कर रहे हैं [31]। भारतीय संस्कृति में वे सारे मूल्य-गुण मौजूद हैं, जो उसे विश्व संस्कृति बना सकें। ऐसा ही विकास अगले दिनों होने जा रहा है। इस प्रकार, पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने वसुधैव कुटुम्बकम के सिद्धांत का सार्थक उपयोग करके संस्कृति को समृद्धि, एकता, और सामंजस्य की दिशा में संरक्षित किया और उसे एक विश्व सांस्कृतिक विरासत के रूप में बचाया।

उपसंहार

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी का साहित्य विशेषकर धार्मिक एवं अध्यात्मिक विषयों पर आधारित है। उनकी रचनाएँ धार्मिक उद्देश्यों, संस्कृति के महत्वपूर्ण पहलुओं, और मानव जीवन के उद्दीपन के लिए जानी जाती हैं। उनकी ग्रंथों में ध्यान, योग, भक्ति, और वेदांत के सिद्धांतों का विस्तारपूर्ण अध्ययन होता है। उनके लेखन में संस्कृति और अध्यात्म के साथ मानव समाज के सुधार का समर्थन किया गया है। पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी का जीवन उदार, समर्पित, और धार्मिक आदर्शों के प्रति समर्थन भरा हुआ था। उनका जीवन ध्यान, साधना, और सेवा में समर्पित रहा है। उन्होंने अपने जीवन को समाज के उत्थान एवं सांस्कृतिक समृद्धि के लिए समर्पित किया और लोगों को धार्मिक तत्वों के माध्यम से जोड़ने का प्रयास किया। उनकी विचारशीलता, तत्वचिन्तन, और ध्यान की प्रवृत्ति ने उन्हें एक आध्यात्मिक गुरु के रूप में प्रमुख बना दिया है। पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने संस्कृति के पुनर्निर्माण के लिए अपने उपनिषदीय ज्ञान, योग्यता, और अनुभव का संदेश दिया। उन्होंने संस्कृति को उसके मौलिक मूल्यों और धार्मिक सिद्धांतों के साथ जोड़ने का प्रयास किया। उनका सिद्धांत था कि संस्कृति का उत्थान मानव चेतना को उच्चतम मानवीय गुणों की दिशा में ले जाने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने यह भी बताया कि संस्कृति का पुनर्निर्माण सिर्फ किताबों और शास्त्रों के माध्यम से ही नहीं, बल्कि व्यक्ति के आचरण, विचार, और उदाहरण के माध्यम से भी होता है। पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने विज्ञान और अध्यात्म के समन्वय की बात की और बताया कि ये दोनों ही क्षेत्र एक दूसरे को विरोधित नहीं करते, बल्कि एक दूसरे को समृद्धि की दिशा में सहारा प्रदान कर सकते हैं। उन्होंने विज्ञान की शोध और अध्यात्म के अद्भुतता को एक साथ लेकर बताया कि समृद्धि और पूर्णता की दिशा में जीवन को एक अद्वितीय साधन के रूप में देखा जा सकता

है।

Compliance: Not required.
Conflict of Interest: None.

संदर्भ

[1] आचार्य श्रीराम शर्मा. यज्ञ का ज्ञान विज्ञान. मथुरा: अखंड ज्योति संस्थान; 1995.

[2] आचार्य श्रीराम शर्मा. भारतीय संस्कृति के आधार भूत तत्त्व. मथुरा: अखंड ज्योति संस्थान; 1995.

[3] आचार्य श्रीराम शर्मा. युग दृष्टा का जीवन दर्शन. मथुरा: अखंड ज्योति संस्थान; 1995.

[4] आचार्य श्रीराम शर्मा. यज्ञ: एक समग्र उपचार प्रक्रिया. मथुरा: अखंड ज्योति संस्थान; 1995.

[5] पण्ड्या प्रणव. नवयुग के दायित्व एवं जीवन साधना. हरिद्वार: श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट; 2005. पृष्ठ 60.

[6] पण्ड्या प्रणव. क्रान्ति की करवट. हरिद्वार: श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट; 2011. पृष्ठ 23.

[7] आचार्य श्रीराम शर्मा. हमारी वसीयत और विरासत. पुनरावृत्ति. मथुरा: युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट, गायत्री तपोभूमि; 1996. पृष्ठ 41.

[8] पण्ड्या प्रणव. चेतना की शिखर यात्रा. हरिद्वार: श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट; 2002 मार्च. पृष्ठ 312.

[9] ब्रह्मवर्चस. ऋषि युग्म का परिचय. पुनरावृत्ति. मथुरा: युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट, गायत्री तपोभूमि; 2014. पृष्ठ 26.

[10] ब्रह्मवर्चस. ब्रह्म कमल. हरिद्वार: श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट; 2011. पृष्ठ 101–102.

[11] खंडेलवाल उषा. आध्यात्मिक मान्यताओं का वैज्ञानिक प्रतिपादन (पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के समन्वयात्मक दृष्टिकोण के सन्दर्भ में). दिल्ली: परिमल प्रकाशन; 2000. पृष्ठ 144.

[12] अखण्ड ज्योति. संस्कृति. मथुरा: अखण्ड ज्योति संस्थान; 2020 अक्टूबर. पृष्ठ 3.

[13] आचार्य श्रीराम शर्मा. युग परिवर्तन की पृष्ठभूमि और रुपरेखा. मथुरा: युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट, गायत्री तपोभूमि; 2010. पृष्ठ 302.

[14] अखण्ड ज्योति. गायत्री-परिवार एक ऐतिहासिक संगठन. मथुरा: युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट, गायत्री तपोभूमि; 1958 अक्टूबर. पृष्ठ 47.

[15] ब्रह्मवर्चस. हमारे सात आन्दोलन. पुनरावृत्ति. मथुरा: युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट, गायत्री तपोभूमि; 2012. पृष्ठ 12.

[16] अग्रवाल उमा. पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं संत कबीर (शोध प्रबंध). मथुरा: युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट, गायत्री तपोभूमि; 2018. पृष्ठ 154.

[17] आचार्य श्रीराम शर्मा. पारिवारिक पंचशील सिद्धान्त - परिवार और उसका निर्माण. मथुरा: युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट, गायत्री तपोभूमि; 2005. पृष्ठ 23.

[18] अखण्ड ज्योति. सनातन एवं शाश्वत है भारतीय संस्कृति. मथुरा: अखण्ड ज्योति संस्थान; 2014 सितंबर. पृष्ठ 26.

[19] अखण्ड ज्योति. रोजगार के अवसर बढ़ाये, ऐसी शिक्षा की जरुरत है. मथुरा: अखण्ड ज्योति संस्थान; 2018 अक्टूबर. पृष्ठ 46–47.

[20] अखण्ड ज्योति. धर्म धारणा का प्रथम लक्षण “धृति”. मथुरा: अखण्ड ज्योति संस्थान; 1987 जुलाई. पृष्ठ 11.

[21] आचार्य श्रीराम शर्मा. वांग्मय 34: भारतीय संस्कृति के आधारभूत तत्व. मथुरा: युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट; 1995. पृष्ठ 3.8.

[22] आचार्य श्रीराम शर्मा. वांग्मय 35: समस्त विश्व को भारत के अजस्र अनुदान. मथुरा: युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट; 1995.

[23] आचार्य श्रीराम शर्मा. वांग्मय 36: धर्मचक्र-प्रवर्तन एवं लोक मानस का शिक्षण. मथुरा: युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट; 1995.

[24] अखण्ड ज्योति. समस्त वसुधा को भारत के सांस्कृतिक अनुदान. मथुरा: अखण्ड ज्योति संस्थान; 2006 जुलाई. पृष्ठ 59.

[25] अखण्ड ज्योति. इस युग की सर्वोपरि आवश्यकता चरित्र निर्माण. मथुरा: अखण्ड ज्योति संस्थान; 2003 जनवरी. पृष्ठ 6.

[26] अखण्ड ज्योति. वैज्ञानिक अनुसंधान की अविराम यात्रा. मथुरा: अखण्ड ज्योति संस्थान; 2009 जुलाई. पृष्ठ 7.

[27] अखण्ड ज्योति. यज्ञीय ऊर्जा - अग्नि शिखा का विज्ञान. मथुरा: अखण्ड ज्योति संस्थान; 2011 अक्टूबर. पृष्ठ 29.

[28] अखण्ड ज्योति. यज्ञीय ऊर्जा - परम पूज्य गुरुदेव की अमृतवाणी. मथुरा: अखण्ड ज्योति संस्थान; 2016 सितम्बर.

[29] आचार्य श्रीराम शर्मा. वांग्मय 65: सामाजिक नैतिक एवं बौद्धिक क्रांति कैसे? मथुरा: युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट; 1995.

[30] अखण्ड ज्योति. अध्यात्म की उपेक्षा नहीं की जा सकती. मथुरा: अखण्ड ज्योति संस्थान; 1971 फरवरी. पृष्ठ 13.

[31] अखण्ड ज्योति. भौतिक ही नहीं, आध्यात्मिक प्रगति भी आवश्यक है. मथुरा: अखण्ड ज्योति संस्थान; 1969 जून. पृष्ठ 29.

https://doi.org/10.36018/dsiij.26.382